3/12/19 M

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 2979

Unique Paper Code : 12057501

Name of the Paper : हिंदी की मौखिक और लोक साहित्य परंपरा

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi—CBCS/DSE-2

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×12=48

(क) लोक साहित्य का सामान्य परिचय देते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिंदी की जनपदीय बोलियाँ कौन-कौनसी हैं ? विस्तार से बताइए।

P.T.O.

(ख) किन्हीं **दो** प्रमुख संस्कार गीतों का विवेचन कीजिए।

अथवा

लोकगीतों की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ग) 'रामलीला' लोकनाट्य का विवेचन करते हुए उसकी विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

अथवा

'भिखारी ठाकुर' कृत 'बिदेसिया' के वैशिष्ट्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(घ) लखमीचंद कृत पद्मावत् का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

लोरिक के आधार पर लोकगाथा का वैशिष्ट्य रेखांकित कीजिए।

2. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 7+7=14

(क) छेड़ी खांछ भागी तेरी बाणि
खैई भरी अकेली पराणी
को बताल मेरी हई गेछ
एसी दाख घुघुति रूण झूण
ए नी बांस. घुघुति.॥

अथवा

इंद्र कै बात सुनिकै भगवान का संतोषु भा औ तब उइ जमराज ते बोले-महराज्! यो तुम्हई गड़बड़घोटाला कीन हउ। अब तुम्हहीं येहका पव्यारौ। किरपा करिकै ई पापिन का फिर ते धरती माँ छाँड़ि आव; काहे ते, पाप गंगा के नहाए ते नहीं, अच्छे करमन ते खतम ह्वात हैं। अब किरपा करिकै अइस भूल न कीन्हेंव।

(ख) करि के गइलन बलमुआँ निरासा!
गवना करा के सँइयाँ घरे छोड़ि दिहलन,
गइलन बिदेस हमें करि के बेकासा।
सँइयाँ के सुख हम कुछुओ ना जनलीं,
बिचहीं बिधाता बितवलन तमासा।

अथवा

कट्ठी होकै न्हाण चलैंगी दोघड़ धरल्यो सिर पै।
गीत गांवती चालैंगी सब लग्न लगाल्यो हर पै।
सिर चोटी कै लगा बोरला, साहर और डाण्डे बाली।
आंख्य मैं स्याही नाक में नथली जुल्फ नाग-सी काली

3. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 7+6=13

(क) बुझौवल (पहेलियाँ)

अथवा

आल्हा

(ख) नौटंकी

अथवा

सारंगा सदावृक्ष।